Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)
ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

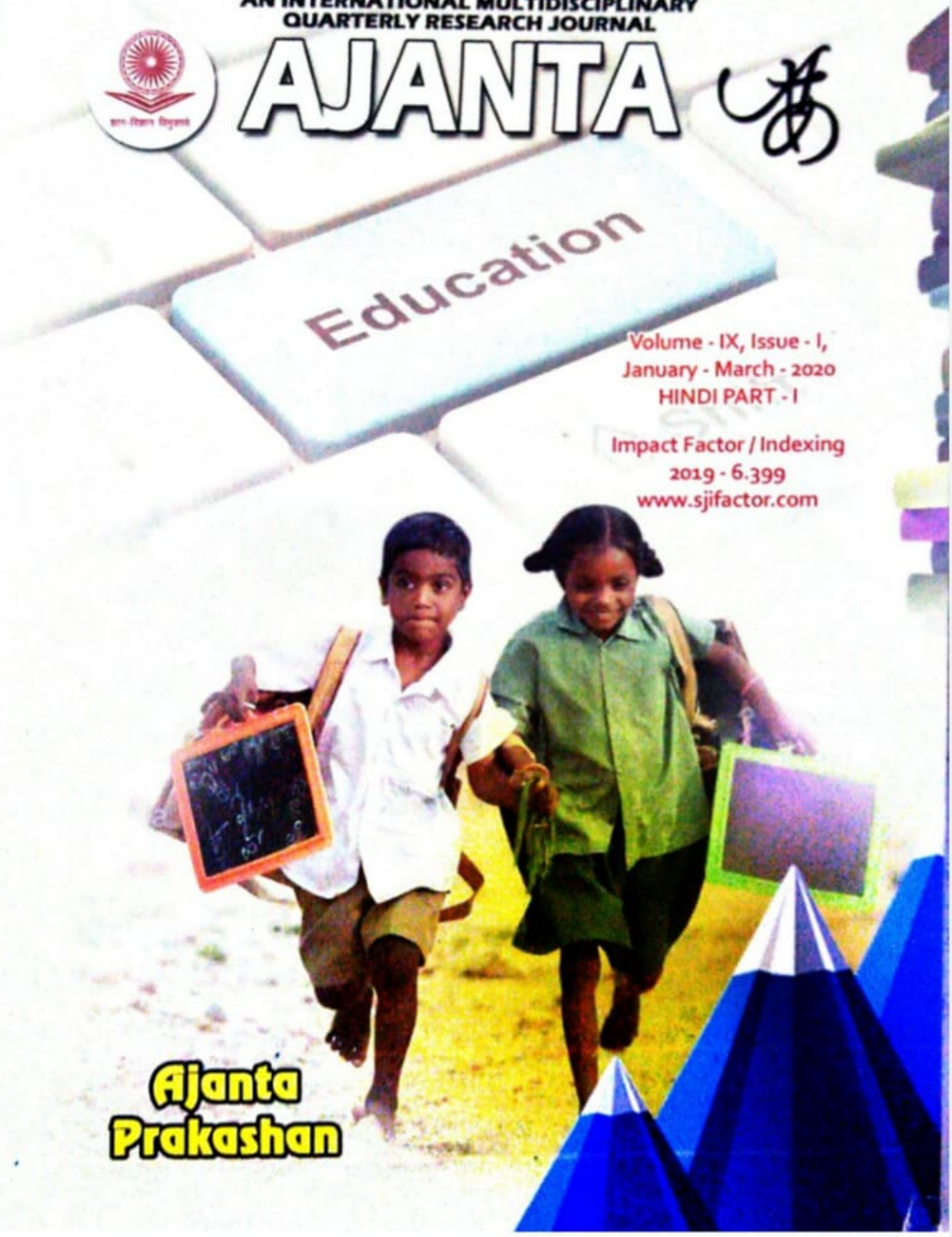

Volume - IX, Issue - I,
January - March - 2020
HINDI PART - I

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Ajanta
Prakashan

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	शोधालेख एवं शोधकर्ता	पृष्ठ क्र.
१	प्रयोजनमूलक हिंदी और अनुवाद क्षेत्र **डॉ. गायत्री मिश्रा**	१-८
२	रोजगारोन्मुख हिंदी (विशेष संदर्भ - अनुवाद का क्षेत्र) **डॉ. सतीश यादव**	९-१३
३	प्रयोजनमूलक हिंदी की विशेषता और स्वरूप **डॉ. एस. सी. अंगडि**	१४-१७
४	अनुवाद क्षेत्र **डॉ. अफशाँ बेगम अहमदअली, देशमुख**	१८-२५
५	रोजगारोन्मुख हिंदी **डॉ. ललिता राठोड**	२६-३०
६	विज्ञापन क्षेत्र **कुशलदास साहू**	३१-३४
७	एक आश्वस्थ सफलता: विज्ञापन **डॉ. नानासाहेब श. गायकवाड**	३५-३८
८	दूरदर्शन के क्षेत्र में हिन्दी **डॉ. बायजा कोटुळे**	३९-४१
९	रोजगार की सभावनाएँ **डॉ. मंत्री आर. आडे**	४२-४९
१०	संगणक और हिन्दी **माहेश्वरी**	५०-५४
११	अनुवाद क्षेत्र और हिंदी **प्रा. प्रमोद किशनराव घन**	५५-५६
१२	रोजगारोन्मुख हिन्दी **डॉ. राजश्री दगडू भामरे**	५७-६०
१३	प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रुप **राधा आत्माराम राठोड**	६१-६४

५. रोजगारोन्मुख हिंदी

डॉ. ललिता राठोड
प्रोफेसर, बलभीम महाविद्यालय, बीड ।

'भाषा' मानव जीवन की अभिव्यक्ति का साधन है। मानव, समाज, जाति समुदाय के लिए भाषा का होना अनिवार्य है। भाषा का अस्तित्व समाज की प्रयोजनियता पर निर्भर है। सामाजिक जीवन के विभिन्न प्रयोजनों के संप्रेषण के लिए भाषा का प्रयोग होता है। भाषा दो आधारोंपर क्रियाशिल रहती है, सौंदर्यपरक, प्रयोजनपरक। मानव जीवन की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति सर्जनात्मक भाषा साधन रूप में प्रयुक्त होती है, जिससे साहित्यिक भाषा का विकास होता है। डॉ.माधव सोनटक्के के अनुसार,"भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का सम्बन्ध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन की उस व्यवस्था से होता है, जो व्यक्तिपरक होकर भी समाज–सापेक्ष होता है। भाषा के इस प्रकार्यात्मक आयाम का प्रयोग किसी प्रयोजन विशेष अथवा क्षेत्र कार्य के संदर्भ में होता है। यह भाषा प्रशासन, व्यवस्था तकनीकी आदि क्षेत्रों की प्रयुक्ति बनकर भाषाई प्रकार्य निभाती है।"1 इसप्रकार सामाजिक व्यवहार के विशिष्ट प्रयोजन में उपयुक्त भाषा 'प्रयोजनमूलक' भाषा होती है। हिंदी भाषा में भी यही प्रयोजनमूलकता है इसलिए यह 'रोजगारोन्मुख भाषा' के रूप में अपना योगदान दे रही है। किसी भी भाषा की व्यवहारिकता पर उसकी उपयोगिता सिद्ध होती है।

हिंदी भाषा केवल राजभाषा तक सीमित नहीं रही, बल्कि वैश्विक बाज़ार में भी अपनी जगह बना रही है। इसलिए हिंदी भाषा का रोजगार के लिए महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। विश्व के लोग हिंदी भाषा और हमारी भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षित हो रहे हैं। इसलिए हिंदी भाषा पढ़ने और पढ़ाने में विदेशों में भी व्यवस्था हो चुकी है। हिंदी भाषा अब केवल भारत की भाषा नहीं तो उसकी पहचान बन चुकी है। जिससे विश्वभर में हिंदी भाषा के रोजगार की अवसर बढ़ते हैं। हमारी राष्ट्रीय भाषा हिंदी की लोकप्रियता और बढ़ने अंतर्राष्ट्रीय महत्व के साथ ही हिंदी में रोजगारों के पर्याप्त अवसर है। अतः हिंदी भाषा को पढ़ने से भारत में ही नहीं विदेशों में भी रोजगार के अवसर अधिक है।

आज का युग विशेषज्ञता का युग है, इस युग की यही विशेषता है कि, आप किसी भी चिज में माहिर हो जाओं और रोजगार पाओं। हिंदी भाषा को आज तक जो रोजगार की भाषा के रूप में न देखने के कारण भाषा के महत्व को कमतर आंका गया। परंतु यह भारत नहीं भुल सकता की इसी भाषा ने हमारे भारत को एक कर दिया और विदेशी शासन को भारत को छोड़ना पड़ा था। भारत की इस भाषा ने भारत को स्वतंत्रता दी है, अब वह रोजगार भी दे रही है। वैश्विक बाज़ार में वह अपनी पकड़ बना रही है। सिर्फ भारत के नागरिकों ने उसके महत्व को समझना बेहद आवश्यक है। किसी भी भाषा का महत्व उसका समाज समझता है, परंतु अगर वह दूसरों के अनुकरण पर अपनी विरासत को भूल जायेगा तो वह समाज भ्रष्टता की ओर अग्रेसर होता है। हिंदी भाषा को हम जानते हैं, तो हमें इसका सम्मान भी करना चाहीए। जो अब हमारे पेट की भाषा भी बनने जा रही है। बस हिंदी